काली मंत्र

ॐ जयंती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी

दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते।

भगवती को अनेक रूपों में पूजा जाता है। भगवती की आराधना करना परम भक्तों को ध्यान करके इस प्रकार नमस्कार करें। उसके बाद अपना पाठ प्रारंभ करें।

भगवान विष्णु के शयन के पश्चात मधु और कैटभ को मारने के लिए कमलजन्घा ब्रह्माजी ने जिन देवीश्री का स्तवन किया था, उन महाकाली देवी का मैं स्मरण करता हूँ। वे अपने हाथों में खड्ग, चक्र, गदा, धनुष-बाण, परिध, शूल, भुशुण्डि, मस्तक और शंग धारण करती हैं। उनके तीन नेत्र हैं। वे समस्त अंगों में दिव्य आभूषणों से विभूषित हैं। उनके शरीर की कांति नीलमणि के समाना है तथा वे दस मुख और दस पैरों से युक्त है।

माँ के नौ दिनों में अनेक रूप पूजे जाते हैं। जैसे पहले नौ रूप बताए गए हैं, ये नौ मूर्तियों अर्थात अवतारों के रूप में हैं। प्रथम दिवस में प्रथम रूप और इसको क्रम से रखते हुए मनुष्य ने नौ दिवस तक प्रत्येक रूप का पूजन करना चाहिए। इसके अलावा भी भगवती के कई रूप हैं।